सामयिक प्रकाशन

3543 जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

भारत-सरकार द्वारा पुरस्कृत

समस्या प्रदूषण की

डॉ० विनोदबाला शर्मा

मूल्य : पाँच रुपये
प्रकाशक : जगदीश भारद्वाज
सामयिक प्रकाशन
3543 जटवाड़ा, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
संस्करण : 1988
...र : डॉ० विनोदबाला शर्मा
: हरिपाल त्यागी
. शान प्रिंटर्स, दिल्ली-110032
.IASYA PRADUSHAN KI by Dr. Vinodbala Sharm
Price :Rs. 5.00

दो शब्द

पिछले कुछ वर्षों से पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या ने विकट रूप धारण कर लिया है। यह समस्या किसी एक गाँव, नगर, प्रदेश या देश की नहीं है। यह समस्या तो संपूर्ण विश्व की है। आज विश्व के वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, राजनेता और प्रबुद्ध नागरिक इस समस्या से अत्यन्त चिन्तित हैं। वैज्ञानिक निरंतर यह प्रयास कर रहे हैं कि विश्व को कैसे इस समस्या से मुक्त कराया जाय। परन्तु पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या दिन-प्रतिदिन विकट से विकटतर होती जा रही है।

वैसे तो हमारी सरकार इस समस्या के समुचित समाधान के लिए समय-समय पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण सम्बन्धी गोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन करती रहती है। उससे बहुत-से सुझाव हमारे सामने आते हैं। किन्तु हमारे नवसाक्षर ग्रामीण भाइयों के लिए उन्हें समझ सकना सरल नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि ग्रामीण नवसाक्षरों के लिए सरल-सुबोध एवं रोचक भाषा-शैली से सम्पन्न साहित्य की रचना की जाये। जिससे हमारे ग्रामीण भाई भी इस समस्या को समझ सकें और अपने आस-पास के पर्यावरण को दूषित होने से बचा सकें। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है। आशा है यह पुस्तक ग्रामीण नवसाक्षरों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

231, ए० जी० सी० आर०
दिल्ली-92

—डॉ० विनोदबाला शर्मा

समस्या प्रदूषण की

डा० पुष्पा का आज गाँव के चिकित्सालय में पहला दिन था। चिकित्सालय में मरीजों की लंबी कतार को देखकर वह दंग रह गई। मरीजों में बच्चे-बूढ़े, जवान सभी थे। ज्यादातर बच्चों की दशा दस्त (डायरिया) के कारण शोचनीय थी। ज्यादातर रोगी पेट की बीमारियों के शिकार थे। बहुत से लोग टाइ-फाइड, पैराटाइफाइड, मलेरिया से पीड़ित थे।

डा० साहिबा का मन पीड़ा से कराह उठा। जब उनका गाँव के चिकित्सालय में तबादला हुआ तो उनके परिवार के सदस्य चिन्तित हो उठे थे। किन्तु वे बहुत खुश थीं। सोच रही थीं कि इस बहाने कुछ वर्षों तक तो गाँव की साफ-सुथरी आबोहवा में रहने का सौभाग्य मिलेगा।

पर सुबह से ही झुंड के झुंड मरीजों को देखकर उन्हें अपने सपने बिखरते-से जान पड़े। बात यह नहीं थी कि वे मरीजों से घबराती थीं। उन्हें दुःख तो इस

गांव का चिकित्सालय, जहां महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों की लंबी कतारें।

बात का था कि शहरों की तरह गाँव का पर्यावरण भी (प्राकृतिक साधन, मिट्टी, जल और वायु) अशुद्ध हो चुका है और ग्रामीण भाई इससे बेखबर हैं ।

सुबह मरीजों को देखने का समय खत्म हुआ । उनके सहयोगी डाक्टर खाना खाने के लिए बुलाने आए । वह उदास मन से खाना खाती रही । साथी डाक्टर ने पूछा—"क्या घर याद आ रहा है ?"

डा० पुष्पा बोलीं, "नहीं, मेरा धर्म सेवा का है । उसमें घर याद आने न आने के कोई मायने नहीं ।"

"तो फिर आप इतनी उदास क्यों है ?" साथी डाक्टर ने प्रश्न किया ।

डाक्टर साहिबा ने अत्यत सहजता से कहा—"मैं यह सोच रही हूँ कि इस गाँव का पर्यावरण दूषित हो चुका है और हमें इस बारे में गाँव वालों को बतलाना चाहिए ।"

साथी डाक्टर ने जोरदार ठहाका लगाया और बोला—"पुष्पा जी, तब तो आपकी परेशानी बेकार है । भला आप इन गँवारों को पर्यावरण के बारे में कैसे समझा सकती है । आप तो अपनी नौकरी कीजिए और आनन्द से रहिए ।"

डा० पुष्पा के चेहरे पर संकल्प की दृढ़ता उभर आई । उन्होंने फौरन नर्स को बुलाया और पूछा—

"तुम इस गाँव में कभी किसी के घर भी जाती हो ?"

नर्स ने उत्साह से कहा—"हाँ-हाँ, बहुतों के घर। सभी गाँव वाले अच्छे स्वभाव के हैं। सभी मुझे बहन की तरह मानते हैं।"

"तब तो हमारे ग्रामीण भाइयों से हमारा भी परिचय कराओ। हाँ, ऐसे रास्ते से चलना जिससे हमें गाँव की भी झलक मिल सके।"

कुछ देर दोनों ने आराम किया और फिर गाँव देखने चल दीं। डा० पुष्पा चलते-चलते एकदम ठिठक-कर खड़ी हो गईं—"अरे यह क्या ?"

नर्स ने कहा—"तालाब है डाक्टर साहिबा !"

"वह तो मुझे भी दिखाई देता है, पर उसी में ही जानवर नहा रहे हैं। उसी मे बच्चे उछल-कूद कर रहे हैं। उसी में कपड़े धुल रहे हैं। उसी में स्त्री-पुरुष नहा रहे हैं। इतना ही नहीं, उसी में गाँव की गंदी नालियों का पानी भी जा रहा है।" डा० पुष्पा ने कहा।

इस प्रकार ग्रामीण भाइयों के बीमार रहने का कारण तो डाक्टर साहिबा की समझ में आ । । वह समझ गईं कि स्वयं ग्रामीण भाई ही जल दूषित करते हैं। फिर दूषित जल के भयंकर परि-मों से बेखबर होकर उसी जल का उपयोग भी

एक तालाब का दृश्य—जिसमें नहाते हुए स्त्री-पुरुष, उछल-कूद करते हुए बच्चे, कपड़े धोती हुई स्त्रियाँ तथा ग्रामीणों द्वारा तालाब मे नहलाए जाते हुए पशु। साथ ही गाँव के गंदे पानी की नालियाँ भी तालाब मे आकर गिर रही हैं।

करते हैं ।

"क्यों सिस्टर, क्या इस गाँव में कुएँ नहीं हैं?" डा० पुष्पा ने नर्स से पूछा ।

"हैं क्यों नहीं डाक्टर साहिबा—दो-तीन कुएँ तो हरिजनों की पट्टी में ही हैं ।" नर्स ने कहा ।

डाक्टर ने आग्रह-भरे स्वर में कहा—"पहले मुझे हरिजनों की पट्टी में ही जाना है ।"

नर्स ने विरोध किया—"क्या करेंगी डाक्टर उधर से निकलकर—वहाँ तो बड़ी गंदगी है । गलियाँ भी छोटी हैं ।"

किन्तु डाक्टर के हठ के सामने नर्स को झुकना पड़ा ।

जब दोनों हरिजनों की पट्टी पर पहुँची तो वहाँ फैली गंदगी को देखकर हैरान हो उठीं । कुएँ भी थे तो कच्चे । जिन पर पक्की ईंटों की मुंडेर तक नहीं बनी थी । साथ ही कूड़े के ऊँचे-ऊँचे ढेर भी थे । कूड़े के ढेरों के पास ही बच्चे खेल रहे थे । कुछ बीमार-से पशु भी बँधे हुए थे ।

डाक्टर पुष्पा को यह समझते देर न लगी कि
श के पानी के सहारे कुएँ के आस-पास की सारी
बहकर इस बिना मुंडेर के कुएँ में जाती होगी ।
गन्दा पानी ये लोग पीते है और फिर तरह-तरह

को बीमारियों के शिकार होते हैं। उनका मन कड़ुवा-हट से भर गया। उन्होंने नर्स से अब तथाकथित बड़ी

बिना जगत (मुंडेर) का कच्चा कुआं पास ही कूड़े के ढेरों पर खेलते हुए बच्चे।

जाति की पट्टी की तरफ चलने को कहा। नर्स ने ऐसा ही किया।

ऊँची कही जाने वाली जातियां की पट्टी में

करते हैं।

"क्यों सिस्टर, क्या इस गाँव में कुएँ नहीं हैं?" डा० पुष्पा ने नर्स से पूछा।

"हैं क्यों नहीं डाक्टर साहिबा—दो-तीन कुएँ तो हरिजनो की पट्टी में ही हैं।" नर्स ने कहा।

डाक्टर ने आग्रह-भरे स्वर में कहा—"पहले मुझे हरिजनों की पट्टी में ही जाना है।"

नर्स ने विरोध किया—"क्या करेंगी डाक्टर उधर से *निकलकर—वहाँ तो बड़ी गंदगी है। गलियाँ भी* छोटी हैं।"

किन्तु डाक्टर के हठ के सामने नर्स को झुकना पड़ा।

जब दोनों हरिजनों की पट्टी पर पहुँची तो वहाँ फैली गदगी को देखकर हैरान हो उठी। कुएँ भी थे तो कच्चे। जिन पर पक्की ईंटों की मुंडेर तक नहीं बनी थी। साथ ही कूड़े के ऊँचे-ऊँचे ढेर भी थे। कूड़े के ढेरों के पास ही बच्चे खेल रहे थे। कुछ बीमार-से पशु भी बँधे हुए थे।

डाक्टर पुष्पा को यह समझते देर न लगी कि बारिश के पानी के सहारे कुएँ के आस-पास की सारी गंदगी बहकर इस बिन[illegible] के [illegible] होगी। वही गन्दा पानी [illegible] [illegible]ह-तरह

की बीमारियों के शिकार होते हैं। उनका मन कड़ुवा-हट से भर गया। उन्होंने नर्स से अब तथाकथित बड़ी

बिना जगत (मुंडेर) का कच्चा कुआँ।
पास ही कूड़े के ढेरों पर खेलते
हुए बच्चे।

जाति की पट्टी की तरफ चलने को कहा। नर्स ने ऐसा ही किया।

ऊँची कही जाने वाली जातियों की पट्टी में

करते हैं ।

"क्यों सिस्टर, क्या इस गाँव में कुएँ नहीं हैं ?" डा० पुष्पा ने नर्स से पूछा ।

"हैं क्यों नहीं डाक्टर साहिबा—दो-तीन कुएँ तो हरिजनों की पट्टी में ही हैं ।" नर्स ने कहा ।

डाक्टर ने आग्रह-भरे स्वर मे कहा—"पहले मुझे हरिजनों की पट्टी में ही जाना है ।"

नर्स ने विरोध किया—"क्या करेंगी डाक्टर उधर से निकलकर—वहाँ तो बड़ी गंदगी है । गलियाँ भी छोटी हैं ।"

किन्तु डाक्टर के हठ के सामने नर्स को झुकना पड़ा ।

जब दोनों हरिजनों की पट्टी पर पहुँची तो वहाँ फैली गंदगी को देखकर हैरान हो उठी । कुएँ भी थे तो कच्चे । जिन पर पक्की ईंटों की मुंडेर तक नहीं बनी थी । साथ ही कूड़े के ऊँचे-ऊँचे ढेर भी थे । कूड़े के ढेरों के पास ही बच्चे खेल रहे थे । कुछ बीमार-से पशु भी बँधे हुए थे ।

डाक्टर पुष्पा को यह समझते देर न लगी कि बारिश के पानी के सहारे कुएँ के आस-पास की सारी गंदगी बहकर इस बिना मुंडेर के कुएँ में जाती होगी। वही गन्दा पानी ये लोग पीते है और फिर तरह-तरह

को बीमारियों के शिकार होते हैं। उनका मन कड़ुवा-हट से भर गया। उन्होंने नर्स से अब तथाकथित बड़ी

बिना जगत (मुंडेर) का कच्चा कुआँ पास ही कूड़े के ढेरों पर खेलते हुए बच्चे।

जाति की पट्टी की तरफ चलने को कहा। नर्स ने ऐसा ही किया।

ऊँची कही जाने वाली जातियों की पट्टी में

हरिजन पट्टी की तरह गन्दगी तो न थी पर गलियों में घरों का गन्दा पानी ऐसे ही बह रहा था। न

गांव की गली मे धीरे-धीरे बहता गन्दा पानी। इधर-उधर ठहरे हुए पानी में मच्छरों के झुंड।

नालियों की ठीक से व्यवस्था थी और न ही कूड़ा डालने का कोई उचित स्थान। इधर-उधर गड्ढों में जो पानी इकट्ठा हो गया था उस पर मच्छरों के झुंड के झुंड मँडरा रहे थे।

कुछ दूर चलने पर एक बड़ा-सा पक्का कुआँ दिखाई पड़ा। मुंडेर भी चौड़ी थी। पर यह क्या? मुंडेर पर खड़ा-खड़ा ही एक व्यक्ति बाल्टी भर-भर कर पानी खींच रहा था और वहीं बैठकर साबुन लगा-लगाकर नहा रहा था। इतना ही नहीं, उसने नहाकर कपड़े भी मुंडेर पर ही धोए। कुछ स्त्रियाँ राख से बाल्टियाँ मांज-मांज कर कुओं में डाल रही थीं। कुछ व्यक्ति मुंडेर पर लोहे की परातों में पानी भर-भर कर पशुओं को पिला रहे थे।

डा० पुष्पा के मुंह से एकाएक निकल पड़ा—"हे भगवान्, मैं यह क्या देख रही हूँ। ईश्वर ने प्राणी के लिए जल जैसी अनमोल चीज दी और मनुष्य अपने ही हाथों उसे दूषित कर खुद बीमारियों का शिकार होता है। कितने अँधेरे में है ये सब। मैं क्या करूँ? कैसे समझाऊँ?" यह सब सोचकर डाक्टर पुष्पा घबरा उठी। नर्स से वापिस चिकित्सालय चलने को कहा। आज जो देखा, उसकी कल्पना तक न थी उनके मन में। रात को देर तक नींद नहीं आई। मन बार-बार

पक्के कुएं की जगत पर बैठ कर नहाते-धोते हुए पुरुष, पानी
पीते हुए पशु, कुएं में गन्दे बर्तन डालकर पानी
भरती हुई स्त्रियां, कुछ स्त्रियां
बर्तन मांजती हुई।

यही कहना था कि मुझे कुछ तो करना ही होगा इन लोगों के लिए।

अगले दिन सुबह उठकर डाक्टर ने नर्स से कहा कि गाँव-भर के प्रतिष्ठित लोगों से जाकर कहो कि डाक्टर साहिबा ने आज दोपहर को बुलाया है। सभी व्यक्ति ऐसे हों जो गाँव की भलाई करने में दिलचस्पी रखते हों, जिनका कहना गाँव के लोग भी मानते हों। नर्स ने ऐसा ही किया।

दोपहर को जब अस्पताल की छुट्टी का समय हुआ तब एक-एक करके गाँव के जमींदार, साहूकार, अच्छे खाते-पीते किसान, कुछ पढ़े-लिखे नवयुवक और कुछ बुजुर्ग एकत्र हुए। डाक्टर पुष्पा ने सबका मुस्कराकर स्वागत किया। उन्हें जलपान कराया।

साहूकार सोचने लगा कि शायद इन्हें अस्पताल के लिए चन्दा चाहिए। जमींदार ने सोचा कि शायद उन्हें अस्पताल बडा करवाने के लिए जगह चाहिए पर जब डाक्टर पुष्पा ने बड़े संयत स्वर में गाँव में जल और वायु की दशा पर कहना शुरू किया तो सब अवाक् रह गये—एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। डाक्टर साहिबा ने स्पष्ट शब्दों में कहा—"मैं यह चाहती हूँ कि जब मैं गाँव में आप लोगों की सेवा के लिए आई हूँ तो तन-मन-धन से आप लोगों की सेवा

डा० पुष्पा के साथ जलपान करते हुए ग्रामीण।

करूँ। पर इस काम में मुझे आप लोगों के सहयोग की भी जरूरत है।"

उन्होंने आगे कहा—"आप लोग समझदार हैं और यह अच्छी तरह समझ सकते है कि ग्रामवासियो को शुद्ध जल और शुद्ध हवा मिले तो शायद वहुत-सी बीमारियो का इस गाँव में नामोनिशान भी न रहे। यहाँ जल और वायु को शुद्ध रखने के लिए जितनी धन की आवश्यकता है, उतनी ही आपसी सहयोग, भाईचारा और सूझ-बूझ की भी।"

उन्होंने आज की बात का समापन-सा करते हुए कहा कि "यदि आप किसी दिन समय निकाल कर यहाँ एकत्र हो सकें तो हम विस्तार से इस बारे में विचार कर ग्राम-सुधार की कुछ नई योजनाएँ बना लेंगे।"

सभी ने सहमति में सिर हिलाया। यह खबर गाँव में आग को तरह फैल गई। सब डाक्टर साहिबा की वात सुनने को उत्सुक थे। अगले दिन प्रतिष्ठित ग्रामीणों के साथ-साथ अन्य ग्रामवासी भी डाक्टर के निवास-स्थान पर पहुँचे।

इतने ग्रामवासियों को आया देख कर डाक्टर साहिबा का मन खुशी से नाचने लगा। उन्होंने सभी के बैठने की व्यवस्था करायी और बोलना शुरू किया :

"मेरे भाइयो व बुजर्गो ! मैं तो गाँव में यह सोच कर आई थी कि यहाँ जल और वायु शहर की अपेक्षा शुद्ध होंगे। पर मुझे यह देखकर बहुत दुःख हुआ कि यहाँ के पानी को स्वयं आपके द्वारा ही दूषित किया जा रहा है--अशुद्ध किया जा रहा है।"

सभी बगले झाँकने लगे, एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। रामू काका से न रहा गया। वह बोले, "कैसे ?"

डाक्टर साहिबा बोलीं, "वही सब बतलाने जा रही हूँ। जल हमारे पर्यावरण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है। या यों कहें कि जल हमारे प्राकृतिक साधनों में से अति महत्त्वपूर्ण साधन है। संसार का दो-तिहाई भाग जल है। फिर भी विश्व का चार प्रतिशत पानी धरती पर है। बाकी पानी समुद्रों में है और पीने योग्य नहीं है। जल जीवन की मूलभूत आवश्यकता है यानि जल के बिना व्यक्ति अधिक दिन जिन्दा नहीं रह सकता। पर जल भी शुद्ध--निर्मल होना चाहिए--तभी हम स्वस्थ रह सकते हैं। मुख्य रूप से जल हमें नदी, झरना, चश्मा, झील, तालाब, कुआँ, नलकूप और हैंडपम्प से प्राप्त होता है। हमें पूरी-पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हम कोई ऐसा काम न करें जिससे जल दूषित हो। क्योंकि दूषित या अशुद्ध जल से अनेक प्रकार की बीमारियाँ होने का डर रहता है।

ग्रामीणों के बीच बोलती हुई
डा० पुष्पा।
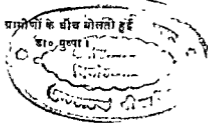
यह सच्चाई है कि हमारे देश में सौ में से पचास-साठ लोग दूषित जल पीने से बीमार होते हैं और सौ में से तीस-चालीस बीमार व्यक्ति अशुद्ध जल के कारण फैलने वाली बीमारियों से मर भी जाते हैं। अशुद्ध जल से बहुत-सी भयानक बीमारियाँ हो जाती हैं। जैसे—पोलियो, पीलिया, पेचिस, दस्त, टाइफाइड, पैराटाइफाइड, हैजा, तपेदिक आदि। इसीलिए कहना पड़ता है कि ईश्वर ने हमें जल जैसी जो अमूल्य वस्तु दी उसको अशुद्ध करना ईश्वर की अवहेलना है, अपमान है, अधर्म है। इसकी हमें सजा भी मिलती है—भिन्न-भिन्न रोगों के रूप में।"

एक ग्रामीण से न रहा गया। डाक्टर साहिबा की बात को काटते हुए बोला, "पर हमने तो कभी अपने पानी को अशुद्ध नहीं किया।"

उसकी अज्ञानता पर डाक्टर मुस्कराये बिना न रह सकीं। बोली—"दुःख तो इसी बात का है कि आपके द्वारा जल गन्दा होता है और आपको पता नहीं चलता। जरा आप सोचिए, आपके गाँव में जो तालाब है, इसमें आप पशुओं को नहलाते हैं या पशुओं को उसी में खुला छोड़ देते है। पशु के शरीर की गन्दगी तो तालाब के पानी को गन्दा करती ही है। पशु मूत्र गोबर का परित्याग भी उसी में करते हैं। रोगी
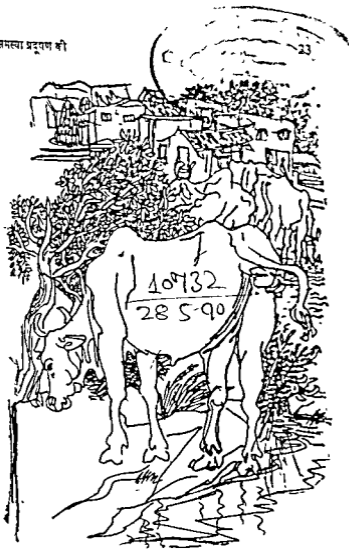
तालाब में गोबर आदि करते हुए पशु।

पशु भी उनमें नहाते हैं । इस तरह तालाब का जल मनुष्यों के द्वारा इस्तेमाल किए जाने लायक नहीं रहता । फिर भी आप लोग और आपके बच्चे भी तालाब में घुस कर नहाते हैं । इससे आप लोगों को खाल की बीमारी जैसे—दाद-खुजली आदि होने का खतरा होता है । गन्दे जल से आँखों के कई ऐसे भयानक रोग भी हो जाते हैं जिनसे आँखों की ज्योति तक नष्ट हो सकती है । इसके अतिरिक्त पशुओं में बहुत से ऐसे संक्रामक (छूत के) रोग भी होते हैं जो मनुष्यों को भी लग सकते हैं ।

इसीलिए तालाब, झील या पोखर के जल में पशुओं को कभी नहलाना नहीं चाहिए । यदि तालाब, झील या पोखर के जल से ही पशुओं को नहलाना जरूरी है तो उन्हें इन स्थानों से दूर खड़ा करके बाल्टी आदि में पानी ले जाकर नहलाना चाहिए । साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पशुओं को नहलाने से बहने वाला पानी दोबारा पोखर या तालाब में न आने पाये ।

इसके अलावा मनुष्यों का भी पोखर या तालाब में नहाना ठीक नहीं । मनुष्यों के नहाने से भी तालाब का जल दूषित होता है । तालाब में नहाने से तपेदिक जैसे संक्रामक रोग एक मनुष्य के शरीर से दूसरे मनुष्य

पशुओं को तालाब से दूर खड़ा करके
नहलाते हुए ग्रामवासी।

हाथ द्वारा नालियों को साफ करते हुए हरिजन।

तालाब के जल मे दवाई छिड़कता हुआ किसान।

कच्चे हैं—उन पर जगत नहीं है। आपलोग तो समर्थ हैं। यदि आप मिल-जुलकर वहां एक पक्का कुआं बनवा दें और बिना जगत (मुंडेर) के कुओं पर जगत बनवा दें तो वे बेचारे प्रदूषित (गन्दा) जल पीने से बच सकते हैं।"

"वह कैसे ?" रामू काका ने बीच में ही टोका।

डाक्टर पुष्पा का उत्तर था—"पहली बात तो यह कि कच्चे कुएँ का पानी गँदला होता है। उसमें धूल-मिट्टी की मात्रा बहुत होती है। दूसरे यदि कुएँ पर जगत नहीं होती तो बरसात के दिनों में आस-पास की गन्दगी बहकर कुएँ में पहुँच जाती है। बिना जगत के कुएँ मे रात के अँधेरे मे कुत्ते-बिल्ली आदि के गिरने का भी डर रहता है। यदि ये जानवर पानी मे गिरकर मर जाएँ तो पानी खतरनाक स्थिति तक दूषित हो जाता है। इस तरह कच्चे जगत के कुओं का दूषित जल पीकर ही उन लोगो के बच्चे भयानक पेट के रोगों के शिकार होते हैं। पेट में कीडे, पेचिस, डायरिया, पीलिया ऐसे ही पानी के परिणाम हैं। बच्चों में पोलियो होने का एक कारण गंदा जल ही है।"

डाक्टर ने अपनी बात को आगे बढ़ाया—"कुएँ के जल के अशुद्ध होने के और भी कई कारण है। जैसे कुएँ की जगत पर बैठकर नहाना-धोना और कुएँ में

कीटाणु दूर हो जाते हैं ।"

इस प्रकार डाक्टर पुष्पा ने पानी को शुद्ध रखने के बहुत से उपाय बताए ।

इसके बाद उन्होंने शुद्ध हवा के महत्त्व को समझाना आरम्भ किया—"आप तो जानते ही हैं कि जिन्दा रहने के लिए वायु या हवा सबसे जरूरी चीज है। वायु के बिना मनुष्य कुछ ही मिनट जिन्दा रह सकता है। इसलिए आस-पास की हवा का शुद्ध रहना बहुत जरूरी है। अशुद्ध वायु मनुष्यों के लिए ही नहीं, वनस्पति जगत् (पेड़-पौधों, फसलों) के लिए भी हानिकारक (नुकसानदायक) है। आपने शायद ध्यान दिया होगा कि जो खेत अथवा पेड़ ईंटों के भट्ठों के पास होते हैं, उन पेड़ों की बढ़ोत्तरी मारी जाती है। कई बार पेड़ों के पत्ते पीले पड़कर झड़ने शुरू हो जाते हैं। खड़ी फसल मुरझायी-सी हो जाती है या कम होती है। ऐसे पेड़ों और खेतों से पैदा हुए अन्न आदि को खाने से मनुष्यों और पशुओं को कई प्रकार से रोग [illegible] रहता है। अशुद्ध वायु में रहने से कई [illegible] हो सकते हैं। खांसी, जुकाम, [illegible], [illegible] में [illegible] आदि। अपने गांव [illegible] शुद्ध रखने के लिए आपको [illegible] होगा। जैसे—[illegible]

ईंटों के भट्ठे की ऊंची चिमनी।

गन्दे बर्तन डालना। कभी भी कुएँ की जगत पर बैठ-कर नहाना-धोना नहीं चाहिए। कुएँ के लिए साफ

कुएँ से कुछ दूरी पर नहाते व कपड़े
धोते हुए किसान।

बर्तनो का ही इस्तेमाल करना चाहिए। पशुओं को भी कुएँ से दूर पानी पिलाना चाहिए। नहाने-धोने अथवा पशुओं का जूठा पानी कभी भी कुएँ में नहीं पहुँचना चाहिए। कुएँ के आसपास कभी भी कूड़े या गोबर के ढेर नही होने चाहिए।

जहाँ तक हो सके कुएँ पक्के हों। उन पर जगत बनी हो। यदि आप कुओं पर साए बनवाने का इन्तजाम कर सकें, तो बहुत अच्छा रहे। साए से कुओं में पत्ते-धूल आदि अधिक मात्रा में नही पहुँच सकेगी।

यदि कभी कोई बीमारी फैल जाये तो पानी को कम से कम पन्द्रह मिनट तक उबालकर प्रयोग करना चाहिए। बाढ व बीमारी के दिनों मे कुओं व तालावों मे किसी योग्य व्यक्ति से पूछकर उचित मात्रा मे लाल दवाई डलवा देनी चाहिए।

यदि गाँवों मे नलो का पानी आता हो तो बाढ के दिनो मे पानी को छानकर और निथारकर प्रयोग करना चाहिए।

पानी के बर्तन में थोडी फिटकरी या चूना डालने से भी पानी शुद्ध हो जाता है। वैसे पीने के पानी को मिट्टी के साफ-सुथरे बर्तनो में रखना भी अच्छा है। क्योंकि मिट्टी के घड़े आदि मे भी पानी के दूषित हो

कीटाणु दूर हो जाते हैं।"

इस प्रकार डाक्टर पुष्पा ने पानी को शुद्ध रखने के बहुत से उपाय बताए।

इसके बाद उन्होंने शुद्ध हवा के महत्व को समझाना आरम्भ किया—"आप तो जानते ही हैं कि जिन्दा रहने के लिए वायु या हवा सबसे जरूरी चीज है। वायु के बिना मनुष्य कुछ ही मिनट जिन्दा रह सकता है। इसलिए आस-पास की हवा का शुद्ध रहना बहुत जरूरी है। अशुद्ध वायु मनुष्यों के लिए ही नहीं, वनस्पति जगत् (पेड़-पौधों, फसलों) के लिए भी हानिकारक (नुकसानदायक) है। आपने शायद ध्यान दिया होगा कि जो खेत अथवा पेड़ ईंटों के भट्ठों के पास होते हैं, उन पेड़ों की बढ़ोत्तरी मारी जाती है। कई बार पेड़ों के पत्ते पीले पड़कर झड़ने शुरू हो जाते हैं। खड़ी फसल मुरझायी-सी हो जाती है या कम होती है। ऐसे पेड़ों और खेतों में पैदा हुए अन्न आदि को खाने से मनुष्यों और पशुओं को कई प्रकार के रोग होने का डर रहता है। अशुद्ध वायु में रहने से कई प्रकार के रोग हो सकते है। खाँसी, जुकाम, तपेदिक, खसरा, चेचक, साँस लेने में दिक्कत आदि। अपने गाँव के आसपास की हवा को शुद्ध रखने के लिए आपको बहुत-सी बातों का ध्यान रखना होगा। जैसे—कभी भी

ईंटों के भट्ठे की ऊँची चिमनी।
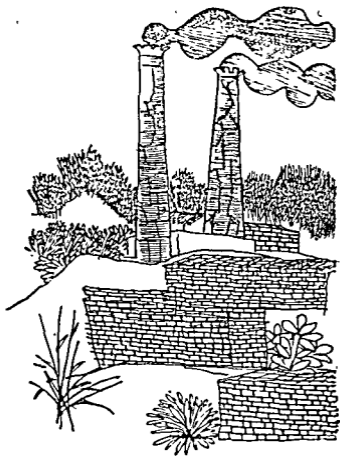
अपने आसपास ईंटों के भट्ठे न बनाएँ, न बनने दें। यदि किसी कारण से कोई ईंटों का भट्ठा या छोटा-मोटा कारखाना आपके गाँव के पास बन भी जाये, तो इस बात का ध्यान रखें कि इस भट्ठे या कारखाने की चिमनी बिल्डिंग से ढाई गुना ऊँची है कि नहीं। यदि इससे कम हो तो आप प्रशासन से शिकायत कर सकते है। क्योंकि यदि चिमनी नीची होगी तो उसका धुआँ आपके गाँव के आस-पास फैलकर आपके गाँव की हवा को दूषित कर देगा।

अपनी बात का समापन करते हुए डाक्टर ने वायु को शुद्ध रखने के लिए और भी अनेक उपाय बताये, जैसे—"अपने आसपास अधिक-से-अधिक पेड़ लगायें। कूड़ा-कचरा, गोबर और नालियाँ ढँकी हुई हों। मकान साफ-सुथरे व हवादार हों। डीजल या पेट्रोल से चलने वाले कृषि के यन्त्रों को काम करके तुरन्त बन्द कर दें। फसलों के लिए कीटाणुनाशक दवाओं का उतना ही इस्तेमाल करें जितना जरूरी हो। यदि आप आपस में मिल-जुलकर गोबर गैस प्लाण्ट लगाएँ तो उससे वायु [illegible] शुद्ध रहे और गोबर का भी सही इस्तेमाल [illegible]।"

[illegible] काका सहित अन्य बहुत से किसान गद्‌गद हाथ जोड़कर खड़े हो गये और भाव-विभोर

गोबर गैस संयंत्र
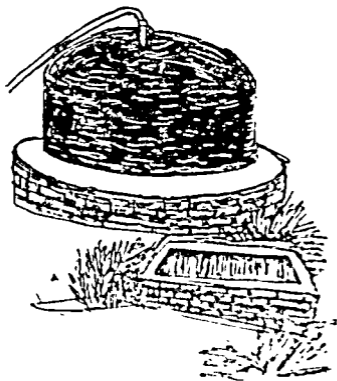
होकर बोले—आपने तो हमारी आँखें खोल दीं। सच ही है—

'हवा-पानी जीवन का सहारा,
इसकी रक्षा धर्म हमारा।'